

महिलाओं की सामाजिक एवं कार्यस्थल पर समस्याएं एवं समाधान

प्राप्ति: 27.07.2023

स्वीकृत: 15.09.2023

डॉ० दीपक कुमार

पोस्ट डॉक्टरेट, राजनीत विज्ञान विभाग

के०एम०जी०जी० पी०जी० कॉलेज

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

सी०सी०एस० यूनिवर्सिटी, मेरठ

ईमेल: deepakverma_100@yahoo.co.in

62

सारांश

विकास की वर्तमान चुनौतियों में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र महिला सशक्तिकरण का है। स्त्रियों का सशक्तिकरण उन्हें नए क्षितिज दिखाने का प्रयास है जिसके माध्यम से वे स्वयं की विभिन्न क्षमताओं का विकास कर अपने लिए की गई उज्ज्वल भविष्य की कल्पना को साकार कर सकती हैं। आज स्त्रियां सभी क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं परन्तु महिलाओं की सामाजिक स्थिति आज भी कुछ हद तक पूर्व की भांति ही लगती है क्योंकि चाहे महिलाएं किसी भी क्षेत्र में कार्य करें, उनके सामने चुनौतियां आ ही जाती हैं, चाहे परिवार संभालने की बात हो या कार्यस्थल पर कार्य करने की, उनके समक्ष समस्याएं आती ही हैं। ऐसे में स्त्रियां परम्पराओं और रूढ़ियों के दौर से उपजे तनाव से मुक्ति चाहती हैं जिसके लिए सामाजिक प्रयास एवं जागरूकता की आवश्यकता है।

प्राचीन समय से ही महिलाओं का दमन एवं उत्पीड़न होता आ रहा है तथा महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से समाज का उपेक्षित वर्ग समझा जाता रहा है। महिलाओं ने हमेशा निम्न स्थिति का सामना किया है। विश्व भर में करोड़ों महिलाएं दयनीय जीवन जी रही हैं तथा उन्हें केवल महिला होने के आधार पर अपने मूल मानवाधिकारों से वंचित होना पड़ता है, भारत में विभिन्न संस्कृतियों का संगम है। स्त्री हर संस्कृति के केंद्र में होकर भी केंद्र से दूर है। सिमोन द बोउवार का कथन है, 'स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।' समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार स्त्री को ढालता आया है और उसके सोचने से लेकर उसके जीवन जीने के ढंग को पुरुष अभी तक नियंत्रित करता आया है।

ऐसे में वर्तमान समय में महिलाओं की समाज की लगभग सभी सेवाओं में बढ़ती भागीदारी को प्रायः महिला सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। महिला सशक्तिकरण का व्यापक अर्थ है परिवार और स्वयं के जीवन की दशा को दिशा देने की स्वतन्त्रता, विचारों का सम्मान और दायम दर्जे से मुक्ति। हमारा संविधान स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्रदान करता है, परन्तु समाज यह मानने को मानसिक रूप से तैयार नहीं है कि जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की समान भागीदारी संभव है। अतः महिलाओं के प्रति समाज की मनोदशा मुख्य समस्या है साथ ही कार्य क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा एवं संरक्षा एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है। विडम्बना ही है कि एक पीड़ित महिला को सामाजिक रूप से अपनी पहचान गुप्त रखनी पड़ती है जबकि पीड़क सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है, जो हमारी सामाजिक विकृति को स्पष्ट करता है।

आज जहाँ महिलाएं चिकित्सा, कानून, पत्रकारिता, शिक्षा, और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रही हैं वहीं पुलिस और सेना में भी वे जिम्मेदारी निभा रही हैं, परन्तु अधिकतर महिलाओं को इन जिम्मेदारियों के साथ-साथ घर परिवार की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है, जिसका उनके स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है।

वर्तमान दौर ने महिलाओं को सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त किया है और उनके मान-सम्मान में वृद्धि हुई है, इसके बावजूद महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियों में कुछ बदलाव नहीं हुआ है। खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। ऐसे में अब महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। घरेलू महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं पर काम का बोझ ज्यादा है। इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर, दोनों के मध्य सामंजस्य बनाने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है, स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार ऑफिस और घर संभालने की दोहरी जिम्मेदारी के कारण तनाव बढ़ता है और बीमारियां पैदा होती हैं और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के चक्कर में महिलाएं अक्सर अपनी सेहत को नजरअंदाज करती हैं। एसोचैम के सर्वे के अनुसार 84 फीसदी कामकाजी महिलाओं को कोई ना कोई लाइफस्टाइल डिऑर्डर है। 48 फीसदी को मोटापा, अवसाद, मधुमेह, पीठ दर्द, उच्च रक्तचाप की शिकायत है। इसी सर्वे के अनुसार कामकाजी महिलाओं में दिल की बीमारी का जोखिम भी बेहद तेजी से बढ़ रहा है। 66 प्रतिशत महिलाओं को 40 साल की उम्र तक दिल की बीमारी होने का खतरा है। 35 से 55 वर्ष उम्र की महिलाओं के बीच हुए इस सर्वे के अनुसार 85 प्रतिशत महिलाएं किसी तरह का व्यायाम नहीं करती और 58 फीसदी महिलाएं खाने में फल-सब्जी का कम उपयोग करती हैं।

इन दोहरी जिम्मेदारियों के बोझ के चलते तनाव एवं अन्य बिमारियों से घिर चुकी महिलाओं को अब अपने लिए समय निकालने की आवश्यकता है। आज अपनी इस स्थिति के लिए कुछ हद तक महिला स्वयं जिम्मेदार है। खाना बनाने से लेकर बच्चों की परवरिश को वह अपनी प्राथमिकता मानती है, इस सोच में बदलाव बेहद जरूरी है। ऐसे में देखा गया है कि जिन घरों में पति या अन्य परिजन महिला के कामकाज में हाथ बंटाते हैं वहां महिलाओं का स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक बेहतर पाया जाता है। एक स्वस्थ महिला ही, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज का निर्माण करती है इसलिए महिलाओं को तनावमुक्त और काम के बोझ से मुक्त रखना पूरे परिवार की जिम्मेदारी है।

हम देखते हैं कि जब भी कामकाजी महिलाओं की बात आती है तो एक ऐसी तस्वीर सामने आती है जिसमें एक महिला के बहुत से हाथ दिखाए गए हैं और हैरानी की बात यह है कि प्रत्येक हाथ कोई ना कोई काम करते हुए दिखाया गया है कुछ हाथ घरेलू कार्य जैसे सफाई, खाना बनाना और बच्चों की देखभाल करते नजर आते हैं, तो कुछ हाथ नौकरी से जुड़े अन्य कार्य करते हुए दिखाए जाते हैं। उस तस्वीर को देखकर ऐसा लगता है कि महिलाएं बिना रुके, बिना थके हर काम कर सकती हैं जैसे कोई मशीन या रोबोट हो। क्या वास्तव में ये तस्वीर महिला सशक्तिकरण की सही परिभाषा को बयान करती है? या फिर कामकाजी महिलाओं के रोजाना की दिनचर्या की कड़वी सच्चाई, जो महिलाओं पर काम के दोहरे बोझ को बयान करती है।

समाज की रूढ़िवादी मान्यता है कि अच्छे परिवार की महिलाएं काम पर नहीं जाती हैं। लेकिन आर्थिक पहलू को देखते हुए बहुत सी महिलाएं बाहर काम करने के लिए जाती हैं परन्तु कामकाजी महिलाओं की आय को कभी महत्व नहीं मिलता क्योंकि सामाजिक रूप से माना जाता

है कि औरतों की कमाई से घर नहीं चलते। दूसरा हमेशा कामकाजी महिलाओं के चरित्र को लेकर बार-बार समाज और परिवार वाले सवाल भी उठाते रहते हैं।

वास्तव में एक कामकाजी महिला और कामकाजी पुरुष की जिंदगी में उतना ही अंतर है जितना कि लैंगिक आधार पर मिलने वाले उनके वेतन में है। एक पुरुष सुबह अपने नौकरी के लिए तैयार होता है और 8 घण्टे की नौकरी करके शाम को घर आ जाता है। ऐसे में सुबह से लेकर रात तक की कोई भी जिम्मेदारियों में उसकी भागीदारी ना के बराबर है। लेकिन दूसरी तरफ एक कामकाजी महिला सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक हर किसी बात के लिए जिम्मेदार मानी जाती है और सुबह बच्चों को स्कूल भेजने से लेकर रात को रसोई की सफाई तक हर जगह अपनी भागीदारी निभाती है। इस दिनचर्या में उनका ऑफिस में किया गया काम और थकान का कोई मायने ही नहीं रह जाता।

गौरतलब है कि महिलाएं घरों में जो घरेलू कार्य करती हैं, उन कार्यों का कोई महत्व नहीं समझा जाता। क्योंकि लोगों को लगता है कि घर में किया गया कार्य आर्थिक रूप से कोई योगदान नहीं देता। सही मायने में देखें तो महिलाओं द्वारा किये गए घरेलू कार्य आर्थिक रूप से सीधा-सीधे योगदान देते हैं लेकिन सामाजिक तौर पर घरेलू कार्य करना महिलाओं की ही मुख्य जिम्मेदारी मानी जाती है। परिवारों में आज भी किसी महिला को तब तक बाहर कार्य करने देते हैं जब तक कि उसका असर घरेलू कार्यों पर नहीं पड़ता। जब नौकरी की वजह से कोई महिला घरेलू कार्यों को नहीं कर पाती तो परिवार को इस बात से समस्या होने लगती है।

भारत विकास रिपोर्ट 2021-22 में विश्व बैंक ने सुझाव दिया है कि अर्थव्यवस्था में अधिक महिलाओं की भागीदारी से देश में अधिक वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार हम महिलाओं की सुरक्षा और उसके सशक्तिकरण की कितनी ही बातें क्यों न करें, मगर सच्चाई यह है कि 21वीं शताब्दी में भारत में महिलाओं की स्थिति में खास परिवर्तन नहीं आया है। भारत में उन महिलाओं को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जो घर से बाहर निकलकर नौकरी करती हैं, उनको सार्वजनिक स्थानों में यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। वे हिंसा की भी शिकार होती हैं। इसके अलावा नौकरी करने के लिए महिलाओं को परिवार या पति से इजाजत लेनी पड़ती है।

एक तरफ हम अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित कर के देश के विकास का सपना देखना चाहते हैं लेकिन दूसरी तरफ कामकाजी महिलाओं के साथ हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार पर बात नहीं करना चाहते। जब तक इस संबंध में चर्चा नहीं की जायेगी तब तक किसी भी प्रकार का विकास संभव नहीं है। महिलाओं को एक जैसे काम के लिए भी पुरुषों से कम वेतन तो मिल ही रहा है। इसके साथ-साथ यौन हिंसा का भी सामना करना पड़ जाता है और सिर्फ यहीं पर उनकी परेशानियां खत्म नहीं हो जाती, ऑफिस के बाद घर के सारे काम की जिम्मेदारी महिलाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से बीमार कर देती है।

आजादी के पश्चात् महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार के कारण उच्च मध्यमवर्गीय परिवारों के साथ-साथ आम शहरी मध्यवर्गीय परिवारों की महिलाएं भी शिक्षित हुईं और उन्होंने आत्मनिर्भर होने की कोशिश की। कई महिलाओं ने उसमें सफलता भी प्राप्त की, लेकिन पुरुषवादी सोच हमेशा उनके आड़े आती है, जो उनकी परेशानियों का कारण बनती है। फलतः वे पूरी तरह से सहज नहीं हो पाती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य समस्याएं भी कामकाजी महिलाओं के समक्ष आती हैं यथा-

- उनको महत्त्वपूर्ण भूमिका न दिये जाना।
- कामकाजी महिलाओं को कार्यक्षेत्र में आने-जाने की सुरक्षा की समस्या।
- महिलाओं का प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष तौर पर मजाक बनाना।
- कार्यालय में 'सेक्सुअल हारासमेंट' का डर।
- महिलाओं को अपने सहकर्मी से पर्याप्त सम्मान नहीं मिल पाना।
- मानसिक दबाव।
- महिलाएँ अधिकांशतः असंगठित क्षेत्र में ही हैं, ऐसे में व्यवसाय, जीवन इत्यादि की असुरक्षा तथा निम्न वेतन इन सभी समस्याओं का सामना।
- स्वास्थ्य समस्यायें।
- कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव।
- महिलाओं को जैविक कार्य (मातृत्व इत्यादि) के लिये भी पर्याप्त छुट्टी न मिल पाना।

जब कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर चर्चा की जाती है तो उनकी घरेलू जिन्दगी भी इसके अंदर समाहित हो जाती है। देखा जाए तो भारतीय कामकाजी महिला का संबंध समाज के मध्यम वर्ग या निम्न मध्यमवर्ग से होता है। उच्च-वर्ग की स्त्रियाँ जीवन निर्वाह के लिए कार्य नहीं करती। कार्य करने के पीछे उनका उद्देश्य मात्र समय बिताना होता है जबकि घरेलू कार्यों में भी उनकी कोई भूमिका नहीं होती। एक मध्य अथवा निम्न मध्य वर्ग की कामकाजी महिला का नसीब ऐसा नहीं होता है। निरुसंधेह उसकी स्थिति दो नावों में सवार व्यक्ति के समान होती है क्योंकि एक ओर उसे कार्यालय में तनाव के अन्तर्गत कार्य करना होता है, साथ ही महिला होने के कारण अड़िकारी वर्ग उसे दबाने की कोशिश में लगा रहता है।

चाहे वह कितनी भी कठोर उद्यमी क्यों न हो, सभी उसकी गलती निकालने और डाँटने में अपना पुरुषत्व सार्थक समझते हैं। बेचारी स्त्री जीविका से हाथ धो बैठने और अन्य कर्मचारियों, परिवार और समाज के सामने प्रतिष्ठा की हानि के डर से आवाज नहीं उठाती है। उसका जीवन तलवार की धार पर चलने के समान होता है इसके अतिरिक्त उसे घरेलू दायित्वों को भी निभाना होता है। कार्यालय में इतना समय व्यतीत करने के कारण उसकी पारिवारिक जीवन में भी अस्त-व्यस्तता आ जाती है। ऐसे में वह अपने घर के कामों को ठीक ढंग से करने में सक्षम नहीं हो पाती है।

पश्चिमी देशों की तरह भारत में घरेलू कामों के पति पत्नी का हाथ नहीं बँटाते हैं कार्यालय से थकी-मांदी घर लौटने पर उसे बच्चों, पति की आवश्यकताओं को देखना पड़ता है। खाना बनाना, मेहमानों की तीमारदारी और उस पर भी सदैव खुश दिखाई देना ही भारतीय कामकाजी महिला की नियति है।

निष्कर्ष एवं समाधान

आज अधिकांश कामकाजी महिलाएँ अपनी भूमिका और कार्य के मध्य संघर्ष का अनुभव करती हैं यह संघर्ष उनके व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और वे दोनों में से किसी भी स्थान से भाग नहीं सकतीं अधिकांश महिलाएँ अपने से अत्यधिक समझौता करके परिवार और कार्यस्थल के बीच सामंजस्य करती हैं। कामकाजी महिलाओं को कार्य के दौरान अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा परिवार के सदस्यों का सहयोग भी उन्हें या तो मिलता ही नहीं है या बहुत कम मिल पाता है

अतः जब तक घर गृहस्थी के कार्यों में कामकाजी महिलाओं की सहायता उनके पति व अन्य सदस्यों के द्वारा नहीं की जायेगी तब तक कामकाजी महिलाओं का कार्य का बोझ हलका नहीं होगा अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के दायित्वों के प्रति पुरुष मानसिकता को परिवर्तित किया जाये अन्यथा कामकाजी महिलाओं को दोहरे कर्तव्यों का पालन करते हुए संघर्ष का सामना करना ही पड़ेगा। कामकाजी महिलाओं की जिंदगी में संघर्ष करने हेतु कुछ सुझाव दिये गये हैं—

- सामाजिक व राजनैतिक जीवन में अधिक सहभागिता।
- घर से बाहर, जैसे— ऑफिस, परिवहन के साधन इत्यादि की व्यवस्था इतनी सुरक्षित एवं 'वुमन फ्रेंडली' हो कि वे वहाँ सुरक्षित महसूस कर सकें।
- सर्वप्रथम महिलाओं की शिक्षा की उचित व्यवस्था हो क्योंकि शिक्षा ही महिलाओं के सब प्रकार के कल्याण में सहायक होती है।
- महिलाओं की जैविक आवश्यकता को देखते हुए छुट्टियों की पर्याप्त व्यवस्था हो।
- सभी कार्य क्षेत्रों से घर तक महिलाओं के लिए विशेष वाहन की व्यवस्था की जाये।
- महिलाओं के प्रति परिवार और समाज की सोच में बदलाव।
- प्रोन्नति में समानता।
- पुरुष स्त्रियों के साथ उपेक्षित व्यवहार न करें।
- संगठित क्षेत्रों में तो 'मातृत्व लाभ' अब अनिवार्य हो गया है परंतु असंगठित क्षेत्र में भी ऐसी कुछ व्यवस्था हो या फिर सरकार की ओर से कुछ वित्तीय सुरक्षा दी जाए।
- 'डॉमेस्टिक हेल्प' को विनियमित तथा सुरक्षित बनाया जाए, ताकि महिलाओं की सहायता हो सके। तभी हम सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की अधिकाधिक भागीदारी बढ़ा सकेंगे और अरुंधति राय, चंदा कोचर, किरण मजूमदार की तरह अनेक महिला उद्यमी, लोक सेवक बन सकेंगी।
- देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को तभी सुनिश्चित किया जा सकता है जब घरों में घरेलू काम में पुरुषों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। घरों में बचपन से ही लड़कों को घरेलू काम के प्रति जागरूक और जिम्मेदार बनाने की जरूरत है ताकि बड़े होकर उन्हें ये ना लगे कि घरेलू कार्य तो सिर्फ महिलाओं से ही जुड़े हैं। बहुत जरूरत है कि हम घरों में पुरुषों को घरेलू काम में काम का साथी बनाए तभी कामकाजी महिलाएं काम के दोहरे बोझ से मुक्त हो पाएंगी।

व्यापक कानूनों, नीतियों और ऐसे पहलुओं को लागू करना जो लिंग-आधारित भेदभाव को रोकते हैं, समान काम के लिए समान वेतन को बढ़ावा देते हैं और कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न जैसे मुद्दों का समाधान करते हैं, महिला सशक्तिकरण की दिशा में आवश्यक कदम हैं। आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलायें अपनी योग्यता और क्षमता का परिचय दे रही हैं। कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं। अगर पुरुष महिलाओं के साथ प्रत्येक मार्ग पर कंधे से कंधा मिलाकर चले और उनको अपना पूरा सहयोग दे तो महिलाओं के विकास की धारा अनवरत चलती रहेगी। तभी एक स्वस्थ समाज और सुखी परिवार का सपना साकार हो सकेगा। समाज अपनी मानसिकता को बदले तभी महिलाओं के कार्यक्षेत्र में आने वाली सभी बाधाएँ दूर हो सकेंगी।

सन्दर्भ

1. शर्मा, प्रज्ञा. (2001). भारतीय समाज में नारी. पोइन्टर पब्लिकेशन: नयी दिल्ली।
2. अखिलेष, नारायण. महिला एवं बाल कानून. आगरा लॉ एजेन्सी।
3. वर्मा, संजय. (2010). तकदीर बदलती महिलाएं. समाज कल्याण. वर्ष 55 अंक 6 फरवरी।
4. पांडा, स्नेहलता. जेन्डर, एन्वायरमेन्ट एण्ड पार्टिसिपेशन इन पालिटिक्स. एम डी पब्लिकेशन: नयी दिल्ली।
5. (2020). दैनिक जागरण 11 मार्च।
6. (2019). हिन्दुस्तान 8 मार्च।
7. सिन्हा, पुष्पा. रोल कनफिलिक्ट अमंग द वर्किंग वूमेन. अनमोल पब्लिकेशन: नयी दिल्ली।
8. कुमार, राज. नारी के बदलते आयाम: नयी दिल्ली।
9. Institute for Women's Policy Research. N.D. "State Statutes That Address the Gender Wage Gap." IWPR unpublished compilation of state laws.
10. <https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/aashank-dwivedi/challenges-for-female-workers-in-india-425110/>.
11. [https://www.ilo.org/global/about-the-ilo/newsroom/news/WCMS_0080291/lang—en/index.htm](https://www.ilo.org/global/about-the-ilo/newsroom/news/WCMS_0080291/lang-en/index.htm).
12. <https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf00003810861>.